P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संत नामदेव के मराठी अभंगों की रसधारा

सारांश

शोधाध्ययन द्वारा संत नामदेव के उपदेशों का सामाजिक प्रभाव का अध्ययन करना मराठी काव्य की देश में व्यापक जानकारी प्राप्त करना, क्योंकि उनकी पदावली महाराष्ट्र के जनमानस को पिछले सात सौ वर्षों से गहराई से प्रभावित करती आ रही है और आज भी उनके अभंग पूरे महाराष्ट्र में घर–घर में गाए जाते हैं। संत नामदेव ने हिन्दी में प्रचुर मात्रा में काव्य–रचना की पर अब तक "गुरु ग्रंथ साहिब" में संग्रहीत उनके 61 पद प्रकाश में आई है।

मुख्य शब्द : मराठी अभंग, रसधारा।

मनोज कुमार अपूर्बा
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
रतन लाल कवंर पाटनी
राजकीय महाविद्यालय,
मदनगंज–किशनगढ़, अजमेर,
राजस्थान, भारत

मानक जैन
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

भक्तश्रेष्ठ श्री नामदेव जी महाराज की मराठी अभंग–वाणी अत्यन्त भाव पूर्ण है। उन्होंने अपनी रचना में हृदय के विचार भगवत् प्रेम से व्यक्त किए हैं। इनकी कविताएं जटिल शब्दजाल का भंडार नहीं, जनता की लोकभाषा में व्यक्त हृदय के विचार हैं। उनकी वाणी में बनावट नहीं, बल्कि हृदय के सात्विक भाव हैं। वे अभंग गाते समय अपने शरीर की सुधबुध भूल जाते थे। आज भी लोग उनकी भावपूर्ण वाणी गाते–गाते भाव विभोर हो जाते हैं।

पंढ़रपुर, विट पर खड़े पंढ़रपुर निवासी भगवान विट्ठल, विट्ठल के अनन्य भक्त, यात्री वारकरी संतों, विट्ठल नाम का अखंड संकीर्तन आदि के प्रति अपार प्रीति के भाव उनके मराठी अभंगों में प्रकट हुए हैं। लगभग तीन हजार मराठी अभंग पाए जाते हैं। उनमें से कुछ मराठी अभंग भावार्थ सहित दिये हैं.....

देह जाओ अथवा राहो। पांडुरंगी दृढ़ भावो।। 1।।
चरण न सोडी सर्वथा। आण तुझी पंढरीनाथ ।। 2।।
वदनीं तुझें मंगलनाम। हृदयीं अखंडित प्रेम ।। 3।।
नामा म्हणे केशवराजा। केला पण चालवी माझा।। 4।।

देह रहे चाहे छूट जाए, परन्तु मेरी तो पांडुरंग विट्ठल के प्रति दृढ़ श्रद्वा है। हे पांडुरंग, मैं आपकी सौगंध लेकर कहता हूं कि मैं आपके चरण कदापि न छोडूंगा मेरे मुख से आपके पवित्र नाम का अखंड उच्चारण होता रहे और हृदय में आपके प्रति अपरंपार प्रेम रहे। नामदेव जी कहते हैं हे केशवराज मैंने जो प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा कराइए।

असत्याचे मल बैसले ये वाचे। ते न फिटती साचे तीर्थोदकें।। 1।।
हरिनामामृत प्राक्षाली जिव्हेतें। पाणीये बहतें काय करीती ।। 2।।
गंगासागरादि तीर्थें कोटिवरी। हरिनामाची सरी न पावती ।। 3।।
हरिनामगंगे सस्नात पै झाला। नाम्या जवली आला केशवराज।। 4।।

मेरी वाणी पर असत्य का मैल चढ़ा है, तीर्थ के जल से धोया नहीं जा सकेगा। इसे साफ करते के लिए तो हरिनामामृत से जिह्वा का प्रक्षालन करना होगा। किसी तरह के अन्य जल से कुछ न होगा। गंगासागर आदि करोड़ों तीर्थ है, जिसकी कोई गिनती नहीं, परन्तु उन सब में हरिनाम की बराबरी करने वाला एक भी तीर्थ नहीं। हरिनामरुप गंगा में स्नान करने पर ही विट्ठल नामदेव के समीप आए।

मीच माझा देव मीच माझा भक्त। मी माझा कृतार्थ सहज असे।। 1।।
बंध आणि मोक्ष मायेची कल्पना। पडली होती मना कैसी भ्रांति ।। 2।।
विट्ठले विचारे दाखविले सुख। होते जे असंख्य हारपले ।। 3।।
नामा म्हणे सोय सापडली निकी। झालो एकाएकी हरिचा दास।। 4।।

मैं ही अपना ईश्वर और मैं ही अपना भक्त हूं। इसमें मैं स्वभावतः कृतकृत्य हूं। बंध और मोक्ष तो माया की कल्पना है, फिर भी मेरे मन को कैसे भ्रम हो गया था। कल्पनातीत आनन्द खोया जा चुका था जो विट्ठल की कृपा से प्राप्त हुआ। नामदेव कहते हैं यह सुविधा प्राप्त हुई कि मैं एकाएक सहसा विट्ठल का सेवक बन गया।

अमृताहुनी गोड तुझे देवा। मन माझे केशवा कां बा न धे।। 1।।
सांग पंढरीया काय करुं यासी। कां रुप ध्यानासी न ये तुझे ।। 2।।

कीर्तनी बैसता निद्रे नागविलें।
मन माझे गुंतले विषय सुखा ।। 3।।
हरिदास गर्जती हरिनामाच्या कीर्ति।
नये माझ्या चित्ती नामा म्हणे।। 4।।

हे विट्ठल ! हे केशव ! आपका पावन नाम तो अमृत से भी मधुर हैं, परन्तु मेरा मन क्यों नहीं उसे रहता ? अगर मैं आपका ध्यान करुं तो आंखों के सामने आपका रुप क्यों नहीं आता ? कीर्तन में बैंठूं तो निद्रा मुझे सताती हैं परन्तु मेरा मन विषय के आनन्द में लीन हो जाता है। हरि के भक्त हरि के दास आपके नाम का गुणानुवाद करते हैं, परन्तु मेरे मन पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता। है पांडुरंग ! आप ही बताइए नामदेव इसका क्या उपाय करें ?

विटेवरी उमा दीनाचां कैवारी।
भेटाया उभारी दोन्ही बाहया।। 1 ।।
गुणदोष त्याचे न पाहेचि डोलां।
भेटे वेलोवेलां केशिराज ।। 2।।
ऐसा दयावंत धेत समाचार।
लहान आणि थोर सांभालितो ।। 3।।
सर्वांलागीं देतो समान दर्शन।
उभा तो आपण समायीं।। 4।।
नामात्हणे तथा संताची आवडीं।
भेटावया कडाडी उभाचि असे ।। 5।।

दीनों के सहायक भगवान विट्ठल भक्तों को मिलने के लिए दोनों हाथ कमर पर रखकर ईंट पर खड़े है। भगवान भक्तों के गुण दोषों का विचार नहीं करते, बल्कि भक्तों से बार–बार मितले हैं। वह ऐसे दयावान हैं कि भक्तों की बार–बार पूछताछ कर छोटे–बड़े सबकी रक्षा करते हैं। वह पांव जोड़ कर खड़े हैं और सबको समान रुप से दर्शन देते हैं। नामदेव जी कहते हैं कि उन्हें संतों से प्रेम हैं और वह संतों की प्रगाढ़ आलिंगन करने के लिए खड़े हैं।

नित्य है दिवाली असे पंढरपुरीं।
ओवालती नारी विट्ठलासी।। 1।।
पावा बाजे वेणु बरविया नीदें।
विट्ठल आनन्दे नाचतसे ।। 2।।
नामा म्हणे आम्ही पंढरीये जीवें।
कवतुकें पहावें विट्ठलासी ।। 3।।

पंढरपुर में नित्य ही दिवाली रहती है, स्त्रियां विट्ठल की आरती उतारती हैं। मुरली और बांसुरी के मधुर स्वर पर भगवान विट्ठल ही प्रसन्नता से नृत्य करते हैं। नामदेव जी कहते है, हम पंढरपुर जाएं और बड़े प्रेम के साथ भगवान विट्ठल का दर्शन करें।

पंढरीच्या सुखा अतंपार नाही लेखा।
शेष सहस्त्र मुखा न वर्णवेचि।। 1 ।।
पंढरीच्या सुखा तोचि अधिकारी।
जन्मोजन्मीं वारी धडली तया ।। 2।।
पंढरीस जाता प्रेम अचंबलत।
आनंदे गर्जत नाम घोष ।। 3।।
विश्वमूर्ति विठो विश्वभर देखे।
विसरता देखैं देहभाव ।। 4।।
नामा म्हणे त्याचा होईन चरणराज।
नुपेक्षित मज पांडुरंग ।। 5।।

श्री क्षेत्र पंढरपुर के आनन्द की सीमा नहीं हैं। उसका वर्णन हजार मुख वाला शेष भी नहीं कर सकता। पंढरपुर के आनन्द का आस्वादन करने का वही अधिकारी है, जिसने जन्मजन्मान्तर में पंढरपुर की यात्रा नियमित रुप से की हो। पंढरपुर जाते ही प्रेम उमड़ता है और आनन्द से विट्ठल नाम का जयघोष शुरु हो जाता है। विश्वमूर्ति विश्वम्भर विट्ठल के दर्शन करने पर दुःख और शरीर की चेतना का विस्मरण हो जाता है। नामदेव कहते हैं मैं उनके चरणों की रज बनूंगा जो पंढरपुर के वारकरी हैं। तब पांडुरंग मेरी उपेक्षा न करेंगे।

पुंढरीची वारी जयाचिये कुलीं।
त्याची पायधुली लागे मज।। 1।।
तेणे त्रिभुवनी होईन सरता।
न लगे पुरुषर्थी मुक्ति चारी ।। 2।।
नामाची आवडी प्रेमरस जिह्वाला।
क्षण जिवावेगला न करी त्यासी ।। 3।।
नामा म्हणे माझा सौयरा जिवलग।
सदा पांडुरंग तया जवली।। 4।।
जिस कुल में नियमित रुप से
पंढरपुर की वारी यात्रा का नियम हैं,
उसकी चरणरज मेरे माथे पर रहे,
जिससे मैं त्रिभुवन में कृतार्थ हो जाऊं।
मुझे
पुरुषार्थ तथा चार प्रकार की मुक्ति की आकांक्षा नहीं।
जिसे प्रभु के नाम में
रुचि हैं उसकी एक क्षण के लिए भी मैं उपेक्षा नहीं कर सकता। नामदेव
जी कहते हैं वह मेरा परमप्रिय मित्र है और श्री विट्ठल सदा उसके समीप वास करते हैं।

पुंढरीची वारी चन्द्रभागे स्नान।
आणिक दर्शन विठोवाचें।। 1।।
हेचि मज धड़ो जन्मजन्मांतरीं।
मागणे श्रीहरि नाहीं इजें ।। 2।।
मुखी सदा नाम संताचे दर्शन।
जनी जनार्दन ऐसा भाव ।। 3।।
नामा म्हणे नित्य तुझें महाद्वारीं।
कीर्तन गजरी सप्रेमाचे।। 4।।

हे प्रभु ! मुझे जन्मजन्मान्तर में श्रीक्षेत्र पंढरपुर का वास, चन्द्रभागा का स्नान और विट्ठल का दर्शन हो। इसके सिवा मैं कुछ नहीं चाहता। मुख से सदा ईश्वर नाम की रट लगी रहे, संतों के दर्शन होते रहें, सदा सर्वकाल भगवान के नाम की रट लगी रहे और जनता में जनार्दन का भाव बसे। नामदेव जी कहते हैं आपके महाद्वार में नित्य बड़े प्रेम से कीर्तन की गुहार लगाया करुं।

सत्य संल्पाचा कर्ता जो विद्याचा।
अनाथ जीवाचां मायबाप।। 1।।
पुंडलिके तथा आणिले रंगणीं।
कटावरी पाणी ठेबूनियां ।। 2।।
अनुरेणुमाजीं व्यापुनि राहिला।
नानात्व जाहला एकलाचि ।। 3।।
नामाम्हणे वेद ज्यांलागी वोभाव।
जोडोनियां पाय उमा ठाके।। 4।।

जो सत्य निश्चय का कर्ता, विद्या का धनी, अनाथ जीवों का माता–पिता है। उसे पुंडलीक मंडल में ले आए और कटि पर हाथ रखकर खड़ा किया। वे अनुरेणु में व्याप्त है, भगवान अकेले ही नानाकार बने हैं। नामदेव जी कहते, वेद जिसका स्तवन करते हैं, वे पांव जोड़ कर खड़े हैं।

सत्य संकल्पाचा कर्ता जो विद्याचा।
अनाथ जीवाचां मायाबाप।। 1।।
पुंडलिके तथा आणिले रंगणीं।
कटावरी पाणी ठेबूनियां ।। 2।।
अनुरेणुमाजीं व्यापुनि राहिला।
नानात्व जाहला एकलाचि ।। 3।।
नामाम्हणे वेद ज्यांलागी वोभाव।
जोडोनियां पाय उमा ठाके ।। 4।।

जो सत्य निश्चय का कर्ता, विद्या का धनी, अनाथ जीवों का माता–पिता है। उसे पुंडलीक मंडल में ले आए और कटि पर हाथ रखकर खड़ा किया। वे अनुरेणु में व्याप्त हैं, भगवान अकेले ही नानाकार बने हैं। नामदेव जी कहते, वेद जिसका स्तवन करते हैं, वे पांच जोड़ कर खड़े हैं।

संतांच्या चरणा द्यावे आलिंगन।
जीवे लिंवलोण उतरावें।। 1।।
तेयें तूं निश्चल राहें माझेमना।
मद तुज यांतना नव्हती कांहीं ।। 2।।
संतांच्या द्वारीचा होई द्वारपाल।
नुरे मायाजाल मोहपाश ।। 3।।
संतांचे प्रसाद संविसीं उरले।
आयुष्य सरलें दुणावेल ।। 4।।
नामा म्हणे संतः आहेत कृपासिंधु।
देई भक्ति बोधु प्रेम सुख ।। 5।।

संतों के चरणों का आलिंगन कर, उनकी पीठ प्राणों से उतारनी चाहिए।

हे मेरे मन तुम वहीं निश्चल रहो, तब तुम्हें कोई कष्ट न होगा। संतों का द्वारपाल बनने पर मायाजाल मोहपाश नष्ट हो जाएंगे। संतों के शेष प्रसाद सेवन करोगे तो आयु दुगुनी होगी। नामदेव जी कहते हैं संत बहुत कृपालु हैं, भक्ति ज्ञान और प्रेम का सुख प्रदान करते हैं।

पंढरीचे प्रेम आहे ज्याजे जीवीं।
त्यांची नित्य नवी करीन आशा।। 1।।
ते माझे सोयरे सुखाचे सद्गुरु।
भवसिंधुचा पारु उतरितो ।। 2।।
माझ्या विठोवाच्या नामीं ज्या विश्वास।
होइल त्यांचा दास आवडीचा ।। 3।।
माड्ल विठोवाच्या चरणीं ज्यांचा भाव।
दारवंटा पाय धरीन त्याचे ।। 4।।
माझ्या विठोवाच्या ध्यान ज्याचे मनीं।
सांडोवा अंगणीं होईल त्याचे ।। 5।।
ऐसे सर्वभावें माझ्या विठोवा शरण।
त्याचे वंदीन चरण नामा म्हणे ।। 6।।

जिसके हृदय में पुंढरपुर के प्रति प्रेम हैं, उन्हीं की मैं नित्य नवीन आशा करता हूँ। वे मेरे संबंधी और सुख के सद्गुरु हैं, वे मुझे भवसागर से पार उतारेंगे। जिन्हें श्री विट्ठल के नाम के प्रति विश्वास है, मैं उनका दास हूं उनके चरण मैं द्वार पर ही स्पर्श करुंगा। जो मेरे विट्ठल का ध्यान करते हैं। उनके आंगन में मैं झाड़ू बुहारु करुंगा। नामदेव जी कहते हैं मैं उनके चरणों की वंदना करुंगा।

काय गुण दोष माझे बिचारिसी।
आहे मी तो राशि अपराधाची।। 1।।
अंगुष्ठापासोनी मस्तकापर्यंत।
अखंड दुश्चित आचरलों ।। 2।।
स्वप्नी देवा तुझी धडली भक्ति।
पुससी विरक्ति कोठोनियां ।। 3।।
तूंचि माझा गुरु तूंचि तारीं स्वामी।
सकल अंतर्यामी गांऊ तुज ।। 4।।
नामा म्हणे माझे चुकवीं जन्ममरण। नको करुं शिण पांडुरंगा ।। 5।।

हे विट्ठल ! मेरे गुण दोषों का विचार करने का परिश्रम मन कर, क्योंकि मैं तो अपराधों का पुंज हूं, और मैंने सदा कुकर्म ही किए हैं। मैंने स्वप्न में भी कभी आपकी भक्ति नहीं की है। तब मैं विरागी कैसे बन सकता हूं। आप मेरे गुरु और स्वामी हैं। हे घटघट वासी आपका हम गुणगान करेंगे। नामदेव जी कहते है मुझे मरण के परिश्रम से बचाइए।

ममता तुटेना मज केशिराजा।
अंगी भाव दूजा लागे पाठीं।। 1।।
शरीरीं तितिक्षा नाहीं क्षमा शांती।
या लागीं श्रीपति वायां गेलों ।। 2।।
नामा म्हणे देवा तारिसी पतिता।
म्हणोनियां सत्ता केली आम्हीं ।। 3।।

हे केशव ! मैं ममता का त्याग नहीं कर सकता, द्वैतभाव मेरे पीछे पड़ा हैं। न मुझमें सहनशीलता हैं, ना ही क्षमा और शान्ति हे, श्रीपति, मेरा जीवन विफल हो गया है। नामदेव जी कहते हैं भगवान आप पतितों को मुक्ति देने वाले हैं, इसलिए आप पर हमारा भी अधिकार हैं।

ब्रह्ममूर्ति संत जगीं अवतरले।
उद्धराया आले दीन जनां।। 1।।
ब्रह्मादिक त्यांचे बंदिती पायवणी।
नामद्येता वदनी दोष जाती ।। 2।।
हो का दुराचारी विषयीं आसक्त।
संतकृपे त्वरीत उद्धरती ।। 3।।
अखंडित नामा त्याची वाट पाहे। निशिदिनीं ध्याये सत्संगती ।। 4।।

दीनों का उद्धार करने के उद्देश्य करने के उद्देश्य से ब्रह्ममूर्ति संतों ने संसार में अवतार धारण किए। ब्रह्म आदि देवता उनकी चरण वंदना करते हैं। मुख से उनके नाम का उच्चारण करने से समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। चाहे दुराचारी हो, चाहे विषयीं, संतों की कृपा से उसका शीघ्र उद्धार होता है। नामदेव जी सदा उसी की प्रतीक्षा करते हैं और सर्वदा उनकी संगत की कामना करते है।

नामयाचे प्रेम केशवचि जाणें।
केशवासी राहणे नाम्यापाशीं।। 1।।
केशव तोचि नामा नामा तोचि केशव।
प्रेम भक्तिभाव मागतसे ।। 2।।
विष्णुदास नामा उभा केशव द्वारीं।
प्रेमाची सिदोरी मागतसे ।। 3।।

नामदेव का प्रेम केशव ही जानते हैं। केशव को नामदेव के पास रहना है। केशव ही नामदेव हैं और नामदेव ही केशव हैं। नामदेव भगवान से भक्ति भाव की याचना करते हैं। विष्णुदास नामदेव, केशव के द्वार पर खड़ा है और प्रेम के सम्बल की याचना करता हैं।

तूं माझी माऊसी मी वो तुझ तान्हा।
पाजी प्रेम पान्हा पांडुरंगी। 1।।
तूं माझी माउली मी तुझे वासरुं।
नको पान्हा चोरुं पांडुरंगे ।। 2।।
तू माझी हरिणी मी तुझे पाडस।
तोडी भवपाश पांडुरंगे ।। 3।।
तूं माझी पक्षिणी भी तुझे अंडज।
चारा घाली मज पांडुरंगे।। 4।।
नामा म्हणे होसी भक्तिचा वल्लभ।
मागे पुढे उभा सांभालिसी ।। 5।।

हे पांडुरंगा ! तुम मेरी माता हो, मैं तुम्हारा बालक हूं, मुझे प्रेम रुपी दूध पिलाओ। तुम मेरी गाय हो, मैं तुम्हारा बछड़ा हूं, तुम दूध न चुराओ। तुम मेरी हिरनी हो, मैं तुम्हारा शावक हूं, तुम मेरा भव–बंधन काटो। तुम मेरी चिड़िया हो, मैं तुम्हारा अंडज हूं, तुम मुझे चुगाओ। नामदेव जी कहते हैं, तुम भक्ति के स्वामी हो, और भक्तों की सब प्रकार से रक्षा करते हो।

इस अंभग का महाराष्ट्र में बहुत महत्व है। यह अभंग पसायदान प्रार्थना के रुप में गया जाता है। इस अभंग का उच्चारण किए बिना भजन, संकीर्तन अथवा रोज का पूजा पाठ आदि धार्मिक विधि सम्पन्न नहीं मानी जाती।

आकल्प आयुण्य व्हावें तयां कुला।
माझिया सकला हरिच्या दासां। 1।।
कल्पनेची बाधा न हो कोणे कालीं।
ही संत मंडली सुखी असो ।। 2।।
अहंकाराचा वारा न लागो राजसा।
माइआ विष्णुदासां भाविकांसी।। 3।।
नामा म्हणे तथा असावें कल्याण।
ज्या मुखीं निधान पांडुरंग।। 4।।

उस कुल की आय कल्पपर्यन्त रहे जो मेरे श्रीहरि का विट्ठल का दास है। मेरे समस्त हरिदासों को किसी समय भी दुख न हो, समस्त संत मंडली प्रसन्न रहे। मेरे प्रिय और भक्त, समस्त विष्णु के दासों को अहंकार का स्पर्श तक न हो। नामदेव जी कहते हैं, जिसके मुख में पांडुरंग के नाम का वास है, उसका कल्याण्ण हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संत नामदेव : लेखक (कृ.गो.वानखड़े गुरुजी) प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई–दिल्ली

श्री नामदेव चरित्र : श्री पंडित राव पहिनकर, महाराष्ट्र, 1994

संत शिरोमणि श्री नामदेव : जीवन और संदेश – अखिल भारतीय नामदेव टांक क्षत्रिय महासभा

संत नामदेव : जीवन और साहित्य : डॉ. निशिकान्त मिरजकर

नामदेव के समकालीन संत : श्री गुलाब चंद वर्मा – 1995